

१) जोड़ी मिलाइये।

- | | |
|--------------------------------|--|
| (1) 20 वीं ग्राह्य | (A) केवल शानी को देख प्रत्यक्ष है। |
| (2) 21 वीं ग्राह्य | (B) रॉनलल्ड प्रशासन महादेविकार |
| (3) 22 वीं ग्राह्य | (C) शान अधिकार |
| (4) शान अधिकार और मुख्य अधिकार | (D) केवल शानी को कुछ भी परोक्ष नहीं है |
| (5) अलीन्दिय शान का निरूपण | (E) शुद्धीपयोग अधिकार की समाप्ति |

२) सच या झूठ बताइये।

- केवली भगवान दुमस्त द्रव्य - क्षेत्र - काल - भाव को कम पूर्णक प्रत्यक्ष जानते हैं।
- अवग्रह - इह - अवाय और दारणा भूत शान के अंदर है।
- जिध विधि के सम्यगान प्रगटना है इस विधि के केवल शान प्रगटना है।
- द्रव्य अहेतुक (निरपेक्ष) है।
- प्रयति अहेतुक (निरपेक्ष) है।
- त्रिकाली द्रव्यस्थाय का दायय लेना अर्थात् इसका शरण लेना।
- त्रिकाली द्रव्यस्थाय का दायय लेना अर्थात् इसे ध्यान का दिय बनाना।
- पाँचवें आरे के नीचे में केवल शान प्रगट करने की शक्ति नहीं है।
- पाँचवें आरे के नीचे में केवल शान प्रगट करने की शक्ति नहीं है।
- जो पदार्थ जो कुछ तक उत्पन्न ही नहीं हुई है इसका सच्चा शान वर्तमान में नहीं हो सकता।
- केवल शान सिर्फ वर्तमान को ही जानता है, भूत या अविद्य को नहीं।

9. 'सत्य' का ज्ञान बताइए।

1. हम सब इन्द्रियों के माध्यम से ^{हमारे} सब कालप्रदेशों के जानते हैं।
2. प्रत्येक इन्द्रिय के माध्यम से हम इसके विषय का प्रत्यक्ष जानते हैं।
3. धाँच इन्द्रियों के विषयों को हम सब को के साथ जानते हैं, जैसे कि खाना, पहना, स्पर्श करना, सुनना और सूँघना यह सब को के साथ हो सकता है।
4. केवलज्ञानी, ज्ञान के क्षेत्रों में तथा अनिश्चित पदार्थों के अपने प्रत्यक्ष और भूत-अविद्य की पदार्थों के परोक्षरूप से जानते हैं।
5. जिनका ज्ञान नहीं है और जिनका ज्ञान नहीं है। इन तथा पदार्थों के केवलज्ञान अध्यात्म जानता है।
6. केवलज्ञान के सत्य स्वरूप की प्रतीति वही मोक्षानन्द की सत्य प्रतीति है। 7. संकीर्ण: लघुविशुद्धात्मक = लघु, ज्ञानप्रदेशों (limited)
7. केवलज्ञानी की तरह सत्यज्ञानी को सीमित ~~अज्ञ~~ पदार्थों का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है। लघु इन्द्रियों के गुणों का लघु ज्ञान।
8. केवलज्ञान में सब कुछ प्रत्यक्ष जानने में ज्ञान है। किसी प्रतीति परों रानी (हृदय सब) को नहीं हो सकती।
9. ज्ञान को ज्ञान के multiply करने पर जो शक्ति मिलती है। इनके गुण तथा ज्ञान है।
10. केवलज्ञानी को विषय के तथा पदार्थों का और सत्यज्ञानी के विषय के सीमित (limited) पदार्थों का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है।

- [illegible]

9) जोड़ी मिलाइये ।

(1) शान सर्वगत है ।

(A) क्या कि द्रव्य गुणपर्ययवत् है ।

(2) जीवद्रव्य शानप्रमाण है ।

(B) क्या कि शेष लोकांलोक प्रमाण है ।

10) जोड़ी मिलाइये ।

(1) शान आत्मगत है ।

(A) व्योमहारन्य का कथन

(2) शान सर्वगत है ।

(B) निश्चयन्य का कथन

11) 'सत्य' या 'जुठ' बताइये ।

1. यदि कलस्यानें जीवकी कलसाहता कतिन शरीरके 2/3 भाग जितनी होती है ।
2. प्रत्येक सत्य लोकांलोक परिणामता है और इसी ही तरह केवलशान भी परिणामता है ।
3. आत्मा इतीन्द्रिय वीर्यप्रमाण है ।
4. शानकी पर्यायको पकड़ने के आत्मा पकड़ने को कहता है ।
5. शान शानका शेष है ।
6. इत्येव द्रव्य इसके कतिन गुण और इनकी अनंतानंत पर्याय कतिन की कतिन आत्मता कहता है ।
7. जैसे वेदांत कहता है जैसे आत्मा शेषव्यापक है ।
8. जैसा शेष होता है जैसा ही शान होता है - यह किई करता है कि शेषाकार पदसंगुल्य शानाकार का कारण है ।
9. शानाकार और शेषाकार आत्मांत शान और शेष दूसरे से निरपेक्ष है ।
10. अत्यंतद्रष्टा का शान लोकांलोक को जानता है ।

$$(28, 24-9) \underline{60}$$

2021

તિજા મારે માથા ઝાગણી હીન 7 મારિય+ મારણ્ય હી, ૨૪.

જો $\Delta u + \lambda u = f$ નો u ઉકેલ λ ની સાથે L^2 નો નોર્મ $\|u\|_{L^2}$ દ્વારા $\|f\|_{L^2}$ નો નોર્મ દ્વારા $\|u\|_{L^2} \leq C \|f\|_{L^2}$ થાય તો λ નો $\operatorname{Re} \lambda \geq 0$ હોય.

- ၁၈၆၆ ခု ဇူလိုင်လ ၁၈ ရက်နေ့တွင် ဘုရားရှိခိုး ပြုလုပ်ခဲ့သည်။

2712181

[illegible]

• શ્રીમતી મેન રાજ કોચર મેનજર ડેવ જ યુનિયન (નમ) વાળા છે, મેન રિસર્ચરશીન રીપુબ્લિક રિપાઇડ રીસ + રીસ મેન રીપુબ્લિક જ રીસ છે.

[illegible]

* $\xi_1 = \eta_1 \eta_2, \eta_1 \eta_2$

(9) 'सच' या 'जुठ' बताइके ।

1. ज्ञात्ता को ज्ञानशीली कहना उचित है।
2. यदि ज्ञात्ता ज्ञान को हीन हो तो ज्ञान विच्येन हो जावेगा।
3. यदि ज्ञात्ता ज्ञान को शक्ति हो तो ज्ञात्ता ज्ञान सकेगा गहि।
4. प्रत्य के दाय्य के बिना गुण हो सकता नहीं।
5. प्रत्य, गुण और परमेश्वर के एक ही होना है।
6. ज्ञान प्रमाण ज्ञात्ता को दोषात् होने के धर्म प्रकटता है।

गाथा २६ – प्रश्नोत्तर

१. जोड़ी मिलाईये:

१	आत्मा सर्वगत है।	A	निश्चय
२	ज्ञेय आत्मगत है।	B	निश्चय
३	जिनवर सर्वगत है।	C	निश्चय
४	ज्ञेय जिनवरगत है।	D	निश्चय
५	ज्ञान आत्मगत है।	E	व्यवहार
६	ज्ञेय स्वरूपनिष्ठ है।	F	व्यवहार
७	जिनवर ज्ञानमय है।	G	व्यवहार
८	आत्मा आनंदप्रमाण है।	H	व्यवहार
९	दर्पण के मयुर को मयुर कहना।	I	व्यवहार

२. नीचे लिखे वाक्य "सच" है या "जूठ" है?

1.	दूरस्थ पदार्थों को जानने के लिये ज्ञान को उनके पास जानना पड़ता है।	सच है	जूठ है
2.	ज्ञेयों को ज्ञान के भीतर आना पड़ता है।	सच है	जूठ है
3.	ज्ञेयाकारों के अवलंबन से आत्मा में ज्ञानाकर होते हैं।	सच है	जूठ है
4.	जितना आनंद है उतना आत्मा है।	सच है	जूठ है
5.	भगवान को पूरण और मुनिराज को प्रचुर आनंद होता है।	सच है	जूठ है
6.	भगवान लोकालोक को असदभूत व्यवहारनय से जानते हैं।	सच है	जूठ है

गाथा २७ - प्रश्नोत्तर

१.० जोड़ी मिलाईये:

1	आत्मा ज्ञानरूप ही है।	A	सम्यक एकांत
2	आत्मा सर्वथा ज्ञानरूप ही है।	B	मिथ्या एकांत

१.० जोड़ी मिलाईये:

3	आत्मा	C	विशेष
4	ज्ञान, सुख, वीर्य आदि	D	सामान्य

२. नीचे लिखे वाक्य "सच" है या "जूठ" है?

1.	आत्मा और ज्ञान अनन्य है।	सच है	जूठ है
2.	आत्मा और ज्ञान अन्य-अन्य है।	सच है	जूठ है
3.	आत्मा और ज्ञान के प्रदेश भिन्न-भिन्न हैं।	सच है	जूठ है
4.	गुणों को द्रव्य का आधार होता है।	सच है	जूठ है
5.	एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य का आधार होता है।	सच है	जूठ है
6.	ज्ञान स्वभाव में एकत्व होना वही आत्मा में एकत्व होना है।	सच है	जूठ है
7.	विशेषों के नाश होने पर भी सामान्य का नाश नहीं होता।	सच है	जूठ है
8.	एक द्रव्य के अनंतानंत गुणों में से सिर्फ एक गुण का अभाव होने पर द्रव्य को कुछ भी नहीं होता।	सच है	जूठ है
9.	निर्विकल्पता में निर्णय की यथार्थता नहीं होती।	सच है	जूठ है
10.	अलिङ्ग्रहण के छठवे बोल के अनुसार आत्मा स्वभाव से अर्थात् स्वसंवेदन ज्ञान से जानने में आता है।	सच है	जूठ है
11.	विभुत्व गुण का स्वामी होने से आत्मा परमेश्वर है।	सच है	जूठ है

૧) ખોદી નિભાઈકે ।

(ક)	૧. જાન	A. નેત્ર
	૨. રોય	B. કોનિ

(ખ)	૩. જાન	C. ગિલ
	૪. રોય	D. પ્રતિગિલ

(ઁ)	૫. જાન	E. સમર્પણ
	૬. રોય	F. ગ્રહણ

૨) રોય' યા ખૂટ' બતાઈકે ।

૧. જાન કોઈ રોય પરસ્પરમે ગમન કરતે હો' ।
૨. બૈસ' રોયો'કા પરિણામ ક્રમસર હોતા હો' બૈસ' હી કનમે' લે કમ-કમલે હી ખાનમે' આ શકે કોસા ગુણ હો' ।
૩. રોયો'કો ખાનમે'કોરણ જાનમે' બિકૃતિ પૈદા હોલી હો' ।
૪. રોયો'કા પ્રશ્ન' જાન પર પડતા હો' ।
૫. જાનમે' હોતે કાકાર રોયો'કે કાકારો' ને પ્રતિ: સ્પર્શ હો' ।
૬. થઈ જાન કોઈનિ શાંસ્ત્રજાન કી બાત હો' ।
૭. રાગ જાન કા રોય હો' ।
૮. હમ પ્રતાપ કોઈર નયલે પદાર્થો'કો ખાનમે' હો' ।
૯. રોયો'કો ખાનમે'કે ભિયે જાનકો રોયો'મે' પ્રવેશ કરના પડતા હો' ।
૧૦. રોયો'કો ખાનમે'કે ભિયે રોયો'કો જાનમે' પ્રવેશ કરના પડતા હો' ।

① जोड़ो/मिलाइये ।

- | | |
|---|------------|
| 1. शान शब्दों में प्रवेश किये बिना इसे जान लेता है। | A. व्यपदेश |
| 2. शान शब्दों में प्रवेश करके इनको जान लेता है। | B. व्यपदेश |
| 3. गेज रूपी पदार्थों में प्रवेश किये बिना इसे देखता है। | C. निश्चय |
| 4. गेज रूपी पदार्थों में प्रवेश करके इनको देखता है। | D. निश्चय |

② प्रश्न सही-उत्तर सही: Please select one correct answer.

- | | |
|--|--|
| 1. दयादानादिक शान | (A) दैव ; (B) शैव ; (C) उपादेय |
| 2. शान को जानने वाला शान | (A) दैव ; (B) शैव ; (C) उपादेय |
| 3. लोकालोक को जानने का स्वभाव-साधन किसे है ? | (A) निश्चयवृत्ति को ; (B) शक्ति को
(C) अहिंस - शक्ति को ; (D) भक्त को
(E) उपादेय को. (F) इन सबको |

③ सत्य या झूठ बताइये ।

1. शान स्वभाव में केवल लोकालोक को जानने का साधन है।
2. गेज रूपी पदार्थ को देखता है, इन्द्रिय पदार्थ को जानता है।
3. प्राप्तिकारिता के लिए शब्दों को स्पर्श करके ही कार्य कर लेता - जान लेता।
4. 'प्राप्तिकारिता' कल्पना को लागू नहीं होती। परन्तु $\frac{1}{2}$ दृष्टान्त को लागू होती है।
5. दृष्टान्त के द्वारा देखने से शब्दों से रूपी पदार्थों को देखता है। इसका
6. शान में प्रतिबिम्ब (= शब्दों का) दृष्टान्त में शानकार ही है।
7. जैसा शब्द वैसा शान, इसलिये शान का कारण शब्द।
8. यह लक्ष्य जानने का साधन ज्ञानयोग की प्राप्ति ही है।
9. शान को जानना अगर इसमें प्रवेश न करना।
10. शक्तिवैचित्र्य = शान की स्वरूपकायक शक्ति

① Multiple Choice : (Please Select one or more Answers) :-

1- इस गाथा में क्या प्रतिपादित किया गया है ?

- A. शैवपराई शान में किस तरह प्रवर्तित है।
- B. शान और शैवपराई में किसी भी तरह का संबंध नहीं है।
- C. शान शैवपराई में किस तरह प्रवर्तित है।
- D. शान और शैव एक दूसरे में प्रवर्तित नहीं।

② जोड़ी मिलाइए।

(क) 1. शान शैवपराई को जानता है।	A. निश्चय
2. शान शानपराई को जानता है।	B. निश्चय
3. शैवपराई ही शानपराई है।	C. व्युत्पत्ति
4. शान शैवों के भीतर धुल जाता है।	D. व्युत्पत्ति

(ख) 5. शैवपराई	E. नैमित्तिक
6. शैवपराई	F. निमित्त

③ 'अथ' का प्रारंभ बताइए।

1. इन्द्रनील रत्न की हाजरी में दूरी खड़े खड़े नीला बन जाता है।
2. आत्मा और शान खड़े खड़े दिख जाता है।
3. रत्न और दूरी शैवों के आत्म में भी दृष्टिकोण रहते हैं।
4. शान अपने प्रदेशों में रहकर शैव को जानता है।
5. ^{यह} कला की दृष्टि शान को और कला की दृष्टि आत्मा को अवगत करने में आया है।
6. शैवपराई ही शानपराई है।

71211

ਜਾਂ ਟਰਾਫੋਮਰ ਉਂ ਜੀਨ ਨੀ ਫਿਰ ਜੀਨੋਟਾਈਪ ਬਦਲੇਗਾ? 39.

ભાગ્યદેવ - દર્પણમાં મયૂર, મરિચ, કૂચ, પુષ્પ વગેરેનાં પ્રતિબિંબ પડે છે. આં ત્રિશ્યુલક
 નો પ્રતિબિંબ દર્પણમાં જ દેખાયા છે; એનાં દર્પણમાં પ્રતિબિંબો દેખાને, તેમાં
 ફરતીમાં ઉપચાર કરીને 'મયૂરદર્પણમાં છે' એવો ચતુર્વર્ણ તૈયાર થાય છે. એવો
 રીતે જાન દર્પણમાં પણ જોઈ પદાર્થોનાં સ્થાનનાં તૈયારીનાં પ્રતિબિંબ પડે છે એવો
 પદાર્થોનાં તૈયારીનાં નિર્ભર જાનનાં જાનની દેખાયારૂપ તૈયારી થાય છે (પરો
 કે નો એવો જ થાય નો જાન જોઈ પદાર્થોનાં જાનનાં રાષ્ટ્ર જ નરિ). આં ત્રિશ્યુલક
 નો જાનનાં થીમ તૈયારીનાં જાનનાં જ દેખાયા છે, પદાર્થોનાં તૈયારીનાં સિદ્ધ જાનનાં
 પદાર્થોનાં નરિ. ત્રિશ્યુલક એવો થીમ એનાં ચતુર્વર્ણ નરિનાં નો, જાનનાં થીમ તૈયારીનાં
 સિદ્ધ પદાર્થોનાં તૈયારીનાં છે એવો નિર્ભર સિદ્ધ પદાર્થો છે - એ રીતે પદાર્થોનાં
 જાનનાં થીમ તૈયારીનાં ફરતી પદાર્થો છે; મરિચ (જાનની દેખાયારૂપ)
 તૈયારીનાં જાનનાં દેખાને, ફરતીમાં ફરતીમાં ઉપચાર કરીને 'પદાર્થો જાનનાં છે'
 એવો ચતુર્વર્ણ તૈયાર થાય છે.

* කාටුම්භිකයාට 'නාම' නිවැරදි කරන තුන-පැයකට, පිටුපස නාමයන් පැහැදිලි කරනු ලබයි.

ग्राह्य - 39 : पुस्तक 2

① जोड़ी मिलानिए ।

1. पदार्थों के द्रव्य-गुण-प्रत्यय	A. बिंदु	P. निमित्त
2. ज्ञान से ज्ञात होता पदार्थों का स्वरूप	B. बिंदु	Q. निमित्त
3. मथुर	C. पुनर्बिंदु	R. उत्पादन
4. दर्पण से दिखती मथुर की अवस्था	D. पुनर्बिंदु	S. उत्पादन

② सच या झूठ बताइए ।

1- सच ज्ञानगत है - यह व्यवहारकर्म है ।

2- ज्ञान अवगत है - यह निश्चयकर्म है ।

3- मीथू की शराश ज्ञान से जा जाती है ।

4. व्यवस्थाकारों का सम्पन्न = ज्ञान पदार्थों का ज्ञान से ज्ञात हो जाना ।

212,1

[illegible]

① जोड़ी मिलाइए ।

(1) निष्वाली जीव	(A) शक्तिपरिवर्तन का संपूर्ण अभाव
(2) सार्विक जीव	(B) अज्ञान से रोक सहित शक्तिपरिवर्तन
(3) केवलशायी जीव	(C) संशयज्ञान सहित शक्तिपरिवर्तन

② जोड़ी मिलाइए ।

(1) राग का इदथरु	(A) परवस्तु का त्याग
(2) वृष का इदथरु	(B) परवस्तु में होनापन
(3) मोह का इदथरु	(C) परवस्तु का ग्रहण

③ 'सच' या 'जुठ' बनाइए ।

- परनिमित्तिक राग-वृष के सद्भाव में भी शक्तिपरिवर्तन का अभाव हो सकता है ।
- परनिमित्तिक राग-वृष के अभाव में भी शक्तिपरिवर्तन का सद्भाव हो सकता है ।
- शक्तिपरिवर्तन का अभाव ही केवली भगवान को पर का ग्रहण-त्याग का न होना है ।
- केवली भगवान सर्व ज्ञानप्रदेशों में अपना ही निरंतर अनुभव करते हैं । - यह इनका पर का अभिप्राय है ।
- शक्तिपरिवर्तन का अभाव केवली भगवान का पर का अभिप्राय है ।
- हम वृद्धास्था देवस्था में भी शक्तिपरिवर्तन को रोक सकते हैं ।
- केवली भगवान को परिवर्तन नहीं है, परिणाम है ।
- केवली भगवान का शान प्रत्यक्ष है क्योंकि उन्हें हमारे मुख्य-दुःख का अनुभव होता है ।
- केवली भगवान की यह लक्ष्मी जानें हमें इतलिये बताई जा रही है कि हमारा ज्ञान भी स्वभाव से लौकिक ही है ।
- केवलशायी भगवान की सेवा का स्वीकार करनेवाले की प्रेरित पर्याय पर आती है ।
- राग-वृष का अभाव करने के लिये हमें हमारा शक्तिपरिवर्तन बंद करने का प्रयत्न करना चाहिये ।

[illegible]

- [illegible]

[illegible]

• પ્રિયગતિ = સુખી નિનિદા પડેલો સ્થાન છે.

ଫିଜିକାଲ୍ = ଭୂମିତାପ (ଫାଉଣ୍ଡେସନ୍) ଥିବା dy_n (ସ୍ଥଳ) ଗୁଣି ଓପିଏସ୍ ଧରିବାବଳ କିମ୍ବା
 ଗୁଣି ଓପିଏସ୍ ଗୁଣି ଗୁଣି ଗୁଣି, ଓପିଏସ୍ କିମ୍ବା ଗୁଣି ଗୁଣି.

① प्रश्न और - उत्तर और : किसी एक या दो के लिये अधिक नहीं उत्तर चुनिये।

1- इस गाथा का सांक्षेप क्या है?

A ☐ केवल भगवान के स्वरूप का वर्णन करना।

B ☐ भूतकेवली के स्वरूप का वर्णन करना।

C ☐ केवल और भूतकेवली में क्या अंतर है वह बताना।

D ☐ विशेष जानने की इच्छा के शोभक भाषा करना।

② जोड़ी मिलाइये।

1 भूतशाली A) चैतन्य के कल्पित विशेषों को कमतर जानते हैं।

2 भूतशाली B) सूर्य समान शान से ज्ञान का अनुभव करते हैं।

3 केवलशाली C) चैतन्य के समस्त विशेषों को युगापत्त जानते हैं।

4 केवलशाली D) दिपक समान शान से ज्ञान का अनुभव करते हैं।

③ 'सच' या 'जुठ' बताइये।

1- भगवान समस्त पदार्थों को जानते हैं इसलिये केवली कहलाते हैं।

2- जो लपट है वह ज्ञानशाली है।

3- जो ज्ञानशाली है वह लपट है।

4- केवलशाली पूर्ण चैतन्यसामान्य ज्ञान का अनुभव करते हैं, भूतशाली सांक्षिक चैतन्यसामान्य ज्ञान का अनुभव करते हैं।

5- लिटिच और लिटिच के समकाल में कुछ अंतर नहीं है।

6- राग-द्वेष की इच्छिरता की अपेक्षा सम्यग्द्रष्टि और केवली में कुछ अंतर नहीं है।

7- विशेष जानने की इच्छा के शोभक निवृत्तिकी अपेक्षा सम्यग्द्रष्टि और केवली में कुछ अंतर नहीं है।

8- ज्ञानरा ज्ञानरा व्यक्तित्व ज्ञानरा ज्ञानरा समर्थन निरवयु भूतकेवली और व्यपहार भूतकेवली हो सकते हैं।

9- ज्ञानप्राप्ति के लिये हमें निरंतर साक्षात्प्राप्त और प्रयत्न करना चाहिये।

10- अब हमें हमारे ज्ञान को ही लक्ष्य बनाना चाहिये।

දැන් මෙය නිවැරදි කරමු.

- [illegible]

१) ओड़ी लिखाई।

(1) द्रव्यभूत	(A) निश्चय से भूतज्ञान
(2) आवभूत	(B) व्यवहार से भूतज्ञान
(3) सूत्र	(C) व्यवहार के उपदेश के निमित्त से होना भूतज्ञान
(4) शक्ति	(D) जिन अवयवों के पुद्गलात्मक व्यवहारों द्वारा उपदेश
(5) शब्दब्रह्म	(E) जिन वाणी में सब कुछ कहने में आये
(6) आवभूत	(F) शक्ति के लक्षण रहित शक्ति

२) 'मेच' या 'मूठ' बताई।

- 1- विवेचन अनुसार लिखे गये शास्त्रों को पढ़कर होते ज्ञान को आवभूतज्ञान कहते हैं।
- 2- द्रव्यभूतज्ञान स्वयंवेदनरूप ज्ञान है।
- 3- आवभूतज्ञान सत्यज्ञान की निमित्त प्रयत्न है।
- 4- शास्त्रज्ञान परम्परा ज्ञान है।
- 5- शब्दब्रह्म से होना ज्ञान उपाधिवाला है।
- 6- भूतज्ञान ज्ञान के ज्ञान को शक्ति से जानना है।
- 7- आवभूतज्ञान में निमित्त के रूप में लीये कर की वाणी या सत्याश्च ही होते हैं।
- 8- भूतज्ञान के निमित्त को यहां उपाधि कहा गया है।
- 9- कैवली ज्ञान के ज्ञान को भूत की उपाधिकृत अर्थ से रहित ज्ञान आवभूतज्ञान ज्ञान के ज्ञान को भूत की उपाधिकृत अर्थ सहित जानना है।
- 10- आवभूतज्ञान से अर्थ का ज्ञान ज्ञान है।

- [illegible]

① ખોટી નિમ્નાંકિત ।

- | | |
|--|------------|
| 1. કેવલિન કેવલાના હાથે બનાવેલી છે । | A. નિમ્નચય |
| 2. કેવલિન બનાવેલી છે । | B. નિમ્નચય |
| 3. કેવલાના હાથે તોળેલી છે । | C. વ્યવહાર |
| 4. કેવલાના બાળક ક્રિયાકા કરતી છે કારણે તોળેલી છે । | D. વ્યવહાર |

② ખોટી નિમ્નાંકિત ।

- | | | |
|----------------|---------------------------------|----------------------------------|
| 1. કેવલદુષ્ટાચ | A. બધા પ્રદેશોમાં મિલકતા હો । | P. કેવલાના કારણે તોળેલી છે । |
| 2. કેવલસુખાચ | B. બધા પ્રદેશોમાં મિલકતા ન હો । | Q. કેવલદુષ્ટાચ કારણે (કેવલદુષ્ટ) |

③ સાચાં યા ખૂલેલાં બતાવો ।

1. કેવલાના કારણે તોળેલી છે ।
2. કેવલાના કારણે તોળેલી છે ।
3. કેવલાના કારણે તોળેલી છે ।
4. કેવલાના કારણે કરવામાં આવેલી છે ।
5. કેવલાના કારણે તોળેલી છે ।
6. કેવલાના કારણે તોળેલી છે ।

④ ખોટી નિમ્નાંકિત ।

- | | |
|------------|------------------------------|
| 1. ગાથા ૩૧ | A. કેવલાના કારણે તોળેલી છે । |
| 2. ગાથા ૩૨ | B. કેવલાના કારણે તોળેલી છે । |
| 3. ગાથા ૩૩ | C. કેવલાના કારણે તોળેલી છે । |
| 4. ગાથા ૩૪ | D. કેવલાના કારણે તોળેલી છે । |
| 5. ગાથા ૩૫ | E. કેવલાના કારણે તોળેલી છે । |

१) प्रश्न कोक-उत्तर कोक: निम्नलिखित उत्तरों में से किसी कोक
सही उत्तर को चुनिये।

प्रश्न: द्रव्य द्रव्यों की 'त्रिरूपता' किस प्रकार है?

- उत्तर: A. □. भूत-भाव-वर्तमान
B. □. द्रव्य-गुण-प्रयथि
C. □. उत्पाद-व्यय-धौव्य
D. □. उपर दिये गये सभी उत्तर

२) 'सत्य' या 'यूक्त' बताइये।

- 1- कोक ज्ञान को जानने के लिये दूसरे ज्ञान की आवश्यक होती है।
- 2- ज्ञाना ज्ञानी स्वपरपुकाराक शक्ति के कारण सत्य को देखता ही जान लेता है।
- 3- कोक ज्ञान प्रयथि में से दूसरी ज्ञान प्रयथि उत्पन्न होती है।
- 4- ज्ञान द्रव्य में से ज्ञान प्रयथि उत्पन्न होती है।
- 5- ज्ञान प्रयथि ज्ञान प्रयथि को जान सकती नहीं।
- 6- ज्ञाना ज्ञायक है और द्रव्य ज्ञायक है।
- 7- द्रव्य-गुण और प्रयथि तीनों में द्रव्यत्व प्रता है।
- 8- इस गाथा में सर्वज्ञान की विधि की बात कही है।
- 9- ज्ञान की प्रयथि पहले उत्पन्न होती है और तत्पश्चात् द्रव्य को जानती है।
- 10- ज्ञाना को जानना और द्रव्य को देखना उन दोनों के परिणाम स्वभाव के कारण है।
- 11- यह जीव स्वयं ही ज्ञानरूप परिणामित होकर स्वतंत्र तथा ही जानता है; इसलिए यह जीव ही ज्ञान है।
- 12- कोई स्वयं ज्ञान में से उत्पन्न हो सकता नहीं।
- 13- ज्ञान का पलटना द्रव्य के पलटने के कारण होता है।

51211

ମାଟିକା ଉପାଧି ଶ୍ରୀ, ପିଣ୍ଡାଞ୍ଜଳି ଟାଣା. ୩୭.

[illegible][illegible]

१ 'सच' या 'सुठ' बताइये।

- 1- मैं अल्पत हूँ, इसलिए भूत और अधिष्ठ की प्रदियों को परिभाषित नहीं जानता हूँ।
- 2- इस गाथा की हीका में शैत्य शक्ति को चित्रपट के उदाहरण के द्वारा शान शक्ति को काले रखाकारों के उदाहरण के समझाया है।
- 3- केवलज्ञान में सब दृश्य-श्रवण-प्रदियों के साथ जानने में होते हैं, इसलिए उन शैत्य के विशिष्ट काल, आकार इन्हीं प्रदियों के जानने में नहीं होते हैं।
- 4- शैत्य ज्ञान में गलत होते हैं - वह गलती स्वरूप रूपदा है और शैत्य की लाचारी है।
- 5- अधिष्ठ की प्रदिय जो दृष्टा हुई ^{था} नहीं है, इसका ज्ञान परिभाषित हो - वह तो केवलज्ञान का ज्ञान हुआ।
- 6- अधिष्ठ के केवलज्ञान का भी होना चाहिए नहीं है। - इसलिए उनके केवलज्ञानावलीय कर्म का आवरण होता नहीं।
- 7- सद्भूत = भूत और परिभाषित प्रदिय
- 8- असद्भूत = अधिष्ठ की प्रदिय

① जोड़ी मिलाइये।

1. प्रत्यक्ष	A. अथ तक
2. दृष्ट	B. निश्चित, स्थिर, चिरक गयी हुई
3. अद्यपि	C. सीधा (अनुमानने नहीं)
4. निश्चित	D. अविद्यमान (भूत और भविष्यकी)
5. अकम्प	E. शान, शांति
6. अक्षुब्ध	F. स्थिर

② 'अथ' या 'पुनः' लगाइये।

- 1- यह गाथा पर्यायों की कठोरता को पूरवार करती है।
- 2- अविद्यमान (भूत और भविष्यकी अक्षुब्ध) पर्यायों केवलज्ञान में प्रत्यक्ष जानने में होती है। इसलिखे भूत है - यह निश्चय का कथन है।
- 3- दुखों की पर्यायों में तो मैं फेरफार नहीं कर सका, मगर मेरी पर्यायों को अवश्य बदल सका हूँ। पुनर्जागर का यही अन्त्या स्वरूप है।
- 4- जो होनहार है, वही होना है - इस निश्चय में पुनर्जागर होता है।
- 5- शरीर की लक्षा के ह्वाकार किन भी लब्धदर्शन को हो सकता है।
- 6- केवलज्ञान में भूत और भविष्य जानने में होते हैं, किंतु भूतज्ञान में नहीं।
- 7- गलतलों में है इस गाथा में लक्ष्य का निषेध कहाया है।
- 8- शान में सीधा जानने में होते हैं = वर्तमान में अथ वे होगे तक जानने में साधेंगे।
- 9- त्यों में कहा योग्यता है इस कारण से शान इनकी अक्षुब्ध पर्यायों को जानता है।
- 10- हम सबको जब इस गाथा के मर्म का भावभासनपूर्वक ह्वाकार आयेगा, तब हमारे सबके केवलज्ञान का Reservation हो जायेगा।
- 11- प्र. गुरुदेवजी इस गाथा के आरे में अंतर के उल्लास के लक्ष्य आरंभ कहते हैं कि - 'युं गाथा है! जैन दर्शनों प्राण है! अज्ञान परमेश्वरता महासंज्ञो है। यह लगता है कि इनका आत्म निरुत्पत्ती केवलज्ञानी है।

① लोदी लिखाई ।

- | | |
|----------------------|------------------------|
| 1. अक्षरों को जोड़ना | A. श्रुतकाल की |
| 2. अंगमात्र | B. अपेक्ष की |
| 3. विनष्ट | C. एक साथ दोष छानना |
| 4. विच्छेद | D. इतिहासिकता, विश्वता |

② 'सच' या 'सूँठ' बताइये ।

- 1- विनष्ट, वर्तमान और अनुत्पन्न - सभी पहलुओं को केवलज्ञान प्रत्यक्ष जानना है।
- 2- विनष्ट, वर्तमान और अनुत्पन्न - सभी पहलुओं का ऐसा संपूर्ण ज्ञान है कि 'वै केवलज्ञान में अक्षरों को जोड़ना' ज्ञाती है।
- 3- अनंत महिमायुक्त केवलज्ञान का अंतर के स्वीकारपूर्वक महिमा ज्ञान केवलज्ञान की प्राप्ति की प्रथम सीढ़ी है।
- 4- यह मोहोत्पत्ति की ओर है।
- 5- सर्वसत्यभाव में प्रभुत्वशक्ति का रूप है, इससे केवलज्ञान में प्रभुत्व प्राप्त है।
- 6- यह सब जान कर सर्वसत्यभावी आत्मा की सम्पुष्ट होकर ईश्वर का अनुभव करना।

(පිළිගැනීම) එහි චරිතයන්ගේ නමින් සහ තමන් තමන්ගේ චරිතයන් තෝරාගත්තේ කෙසේද
 (කෙසේද චරිතයන් සහ තමන් තමන්ගේ චරිතයන් ගැනින් ගැනින් තමා
 විමසා බැලීම) යන ප්‍රශ්න සඳහා පිළිතුරු :-

৩।২।: এলাহুয়াত মল্লিক ও অন্য পরিণ পদার্থ
কিনে পত্র পদার্থ মল্লিক ১৫ ১১ - জানু ১৫ ১০

કોષ્ટક :- જોઈને અફિલનો મહાનર ઇતિહાસના મુદ્દા મુજબની વર્ણનાત મળે છે,
તેમને મારે પડેલેમુ મુજબની મળેલું મહાનર છે મારે મળેલું મળે છે.

[illegible][illegible]

නිර්වචන : දැනගැනීම = විද්‍යාත්මක

• $u_2(x) = \sin(x)$ හරි අනෙකුත් $\sin(x)$ දී x හි u_2 ; $\sin(x) - \sin(x)$

• អតិថិភាព = ភាព; វត្ថុនៃ មុខ ក

• $27681 + 67 = 27748$; 2721400

• ପ୍ରକାଶ = ଅଧ୍ୟୟନ, ପଢ଼ିବା, ବିଧାନ କରୁଥିବା - ଅନ୍ତରୀକ୍ଷ ଗବେଷଣା

$$a_{n+1} = m_{n+1}$$

• $\Delta H_{\text{comb}} = \text{combustion}$

[illegible][illegible]

• બાંધકામ કામના કારણે નિર્મિત થઈ, તેને વિનિયમિત બાંધકામ કહેવામાં આવે છે. આના કારણે, આવા કામોમાં ગુણવત્તા નિયંત્રણની જરૂર પડે છે.

[illegible][illegible]

- ଆନୁମ୍ନିକ ଶିକ୍ଷଣ = ଆନୁମ୍ନିକ ଲେବିଲିଂ, ଏହା ସହଜ f_2 , ଏହା ଜଟିଳ f_2 .

[illegible]

• ආර්ථිකයාගේ කටයුතු + කිසිදු කාරණයක නොවේ.

① जैसे-जैसे

1- अक्षयपत्र	A जिला
2- पत्रिका	B भूतकाल
3- अक्षयपत्र	C अक्षयकाल
4- अक्षयपत्र	D अक्षयकाल
5- अक्षयपत्र	E अक्षय
6- अक्षयपत्र	F इन्द्रियपत्र

② जैसे-जैसे

- 1- भूत और आकाश के बीच के अक्षयपत्र होते हैं।
इसलिए इन्द्रियपत्र अक्षय-अक्षय के अक्षय हैं।
- 2- इन्द्रियपत्र अक्षय-अक्षय अक्षय हैं, अक्षय अक्षय के अक्षय हैं।
- 3- इन्द्रियपत्र = इन्द्रिय, अक्षय, अक्षय और अक्षय - इस अक्षय।
- 4- इन्द्रियपत्र के अक्षय के अक्षय अक्षय-अक्षय अक्षय हैं, अक्षय अक्षय के अक्षय हैं।
- 5- 'इन्द्रियपत्र अक्षय हैं' - यह अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय हैं।
- 6- इन्द्रियपत्र अक्षय के अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय हैं।
अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय हैं।
- 7- अक्षयपत्र अक्षय अक्षय हैं, अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय हैं।
- 8- अक्षयपत्र अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय हैं।
- 9- अक्षयपत्र = अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय अक्षय हैं।

ઉદ્દેશ્ય: હા, કેનીશ્વર શાળા માટે જે જે ફંડોમાં કોઈ ને ને (બધું) સોંપે છે એના સુધે તે છે:-

ગાંધી: જે ગાંધી કોપરેશન, સપ્લેય, મૂળ, કોમ્પોઝિટ, બચત બેંક-કોમ્પોઝિટ, ગાંધી કેનીશ્વર શાળા ની. ૪૧.

કોમ્પોઝિટ: જે શાળા કોપરેશન, સપ્લેય, મૂળ, કોમ્પોઝિટ, નહીં કોમ્પોઝિટ ને જે બેંક બચત બેંકમાં છે, તે શાળા કેનીશ્વર ફંડોમાં કોમ્પોઝિટ છે.

ગાંધી: બેંક, કોમ્પોઝિટ અને પોલિસ કોમ્પોઝિટ શાળાના બેંકમાં કોપરેશન (શાળા, સપ્લેય, મૂળ, કોમ્પોઝિટ)-ફંડોમાં છે; અને ફિલ્ડ (ફિલ્ડ) ને બેંકમાં બેંકમાં કોપરેશન-ફંડોમાં છે.

પોલિસ: ૧. સપ્લેય ને ગાંધી, ફંડો ને સપ્લેય ગાંધીમાં છે.

૨. કોપરેશન નહીં ગાંધી, ફંડો ને સપ્લેય ગાંધીમાં છે.

૩. મૂળ ને ગાંધી, ફંડો ને મૂળ બેંકમાં છે ને સંધિ છે.

૪. કોમ્પોઝિટ નહીં ગાંધી, ફંડો ને કોમ્પોઝિટ બેંકમાં છે ને સંધિ છે.

૫. બચત બેંક ને ગાંધી, ફંડો ને બચત-બચત સંચાલનમાં કોમ્પોઝિટ છે.

૬. બચત બેંક અને બચત બચત બચત બચત બચત ગાંધી, ફંડો ને પોલિસ અને બચત સંચાલન (સંધિ) ને કોમ્પોઝિટ છે.

કેનીશ્વર શાળા: કોમ્પોઝિટ કેનીશ્વર શાળા કોપરેશન, સપ્લેય, મૂળ, કોમ્પોઝિટ, નહીં કોમ્પોઝિટ ને જે બેંક બચત બેંકમાં છે. એને પ્રજાસત્તાક કેનિશ્વર અને પ્રજાસત્તાક પોલિસ બેંકમાં, તેને કોમ્પોઝિટ શાળા સંચાલન-કોમ્પોઝિટ માટે ગાંધી છે.

બેંક, શાળા (કોમ્પોઝિટ), અને પોલિસ માટે સંચાલન શાળાના સપ્લેય મૂળ છે. તેને પોલિસમાં બેંકમાં ફંડોમાં છે.

કોપરેશન = બચત, ફંડો

ફંડોમાં કોમ્પોઝિટ નહીં નહીં કેનીશ્વર શાળા છે. તે શાળા કોપરેશન કોમ્પોઝિટ માટે અને સપ્લેય કોમ્પોઝિટ સપ્લેય ફંડો, મૂળ, કોમ્પોઝિટ બેંકમાં છે, તેને જે બેંકમાં કોમ્પોઝિટ માટે છે - એને બેંકમાં કોમ્પોઝિટ માટે બેંકમાં છે.

એ બેંકમાં બચત જે બચતમાં છે એને જે બેંકમાં છે, તેને સંચાલન કોમ્પોઝિટ ફંડોમાં ફંડોમાં ને સંચાલન પ્રજાસત્તાક શાળામાં શાળામાં છે.

એ પ્રજાસત્તાક કેનિશ્વર અને પ્રજાસત્તાક ફંડોમાં સપ્લેય બચતમાં બેંકમાં છે, બેંકમાં બચતમાં સપ્લેય ફંડોમાં બેંકમાં છે. તેને જે પ્રજાસત્તાક શાળામાં ફંડોમાં સપ્લેય શાળામાં બચતમાં ને ગાંધી છે, બેંકમાં અને કોમ્પોઝિટ માટે ગાંધી છે - એને સંચાલન છે.

કેનીશ્વર શાળા માટે બેંકમાં કોમ્પોઝિટ પ્રજાસત્તાક ફંડોમાં, તેને ને બેંકમાં છે.

① जोड़ी मिलाइये।

1- इन्द्रियज्ञान के अहिंसक कारण	A. मन
2- इन्द्रियज्ञान के अंतरंग कारण	B. अप्रदेश
3- इन्द्रियज्ञान	C. अप्रदेश
4- अतीन्द्रियज्ञान	D. ज्ञान के स्वरूप को जिन स्वरूपों में
5- विरूप	E. उपदेश, अंतःकरण, इन्द्रिय आदि
6- स्थूल	F. उपलब्धि, संस्कार आदि
7- सूक्ष्म	G. अप्रदेश को ही, स्थूल को ही, धूर्त को ही, वर्तमान को ही जानना है।
8- अंतःकरण	H. अप्रदेश को भी, सूक्ष्म को भी, अधूर्त को भी, अगुल्य-व्यतीत को भी जानना है।
9- अप्रदेश	I. परमाणु, कालाणु

② 'सच' या 'गूढ़' बताइये।

- 1- अंतःकरण = हृदय
- 2- अप्रदेश = जिसके कोई प्रदेश न हो।
- 3- उपदेश, अंतःकरण और इन्द्रिय आदि अहिंसक कारण इन्द्रियज्ञान की प्राप्ति के मुख्य हैं।
- 4- इन्द्रियज्ञान के अंतरंग कारण उपलब्धि (संयोग) और संस्कार आदि के ज्ञान ही होते हैं।
- 5- भूल और अधिष्ठ की जड़ों पर ज्ञान के रोंच नहीं बन सकती।
- 6- अतीन्द्रिय ज्ञान असहाय है (इसे किसी की सहाय की जरूरत नहीं)।
- 7- पंचादीनादिके राग की तरह इन्द्रियज्ञान भी दुःखरूप है, हवे है, आत्मप्राप्ति के लिये अधिरूप है।
- 8- सच की प्रकृति - "मैं" सच स्वरूपी हूँ - इस को होती है।

① जौरी निम्नाहें ।

1. कर्म का भौगलिक	A. राज्य के शासन रूप होना
2. राज्य रूप परिणामन	B. राज का अनुभव
3. राज्यार्थ	C. राज्य के प्रयोजन के
4. दर्शनमोह संबंधित राज्यार्थ परिणामन	E. नीतिराज दृष्टियों की दृष्टिकोण रूप परिणामन
5. दर्शनमोह रहित चार्मि-मोह संबंधित राज्यार्थ परिणामन	F. आत्मरूप से अंगीकृत राज्यकार के अनुभव दृष्टिकोण दिक्कल आध रूप परिणामन
6. नीतिराज दृष्टिकोण संबंधित राज्यार्थ परिणामन	D. आत्मरूप से अंगीकृत राज्यकार के अनुभव दृष्टि-दिक्कल दिक्कल आध रूप परिणामन

② 'नय' या 'न्यू' बताइए ।

- 1- राज्य के दृष्टिकोण से राज में अर्थ के होना, राज दिक्कल राज है, अनुमानित है ।
- 2- राज्यार्थ परिणामन दृष्टि राज का पर राज्य रूप से परिणामन ।
- 3- अज्ञानी निष्ठादृष्टि राज्यार्थ परिणामन दीर्घ लक्ष्य का कारण है ।
- 4- निष्ठादृष्टि राज का राज्यार्थ परिणामन अल्प लक्ष्य का कारण है ।
- 5- पर राज्य में अल्प-ममतादि बुद्धि अज्ञानी के राज्यार्थ परिणामन का कारण है ।
- 6- राजा प्रति जाती हुई बुद्धि व्यभिचारिणी है, इसलिए उसे प्रयोजनकार के दृष्टिकोण से नहीं करना चाहिए ।
- 7- राजा राज्य परिणामन राज में अर्थ का कारण है ।
- 8- राज्य परिणामन लक्ष्य से अनुमानित तक होता है ।
- 9- निष्ठादृष्टि राज का राज्यार्थ परिणामन का कारण राज होता है ।
- 10- निष्ठादृष्टि राज का दृष्टि-दिक्कल होता है ।

2181	(1) 1981-82 1981-82 1981-82 1981-82 1981-82 1981-82 1981-82 1981-82 1981-82 1981-82
------	---

[illegible]

આચાર્ય જ્ઞાનને તેણે 7 જાન બંધનું તરણ છે, 7 જાન બંધનું તરણ છે; બંધનું તરણ નો મોર-રાગ-રેષા મળે જ છે.

૨૧૨૨ સોના હોય તો સોત નહિ અને જાડોગ હોય તો સોત - એકે બે ભાગના
તરીકે સંચય ને આજીવની રૂપે છે. આ જૂના સંચયરૂપે ભાગના સંચય
ગ્રાહ છે; તે જ આજીવની રૂપે છે, એક જ છે.

- રોડ/પરિવહન = રોડ-ટ્રાન્સપોર્ટ સેક્ટર
- જાન હેઠળ છે તો ભાગ લેતા જ નહીં એ એક જૂની છે. જેમાં ઉદ્યોગો છે. (જો રોડ ટ્રાન્સપોર્ટ + રોડ જ નહીં) તો તો રોડ ટ્રાન્સપોર્ટ તોય તોય રોડ જ નહીં. (જો) હેઠળ હોય તોય નહીં.
- દેશ, બાહ્ય સેક્ટર, આયુ-આયુ કાર એકમાત્ર સેક્ટર હોય તોય નહીં હોય તોય રોડ-ટ્રાન્સપોર્ટ જ છે.
- એકમાત્ર ભાગ્ય શ્રેણી છે - એક સિદ્ધિમાં એક, રોડ ટ્રાન્સપોર્ટ કાર એક જ હોય-ટ્રાન્સપોર્ટ-ટ્રાન્સપોર્ટ એક જ હોય તોય નહીં.

① प्रश्न पूछे - उत्तर आने के | निम्नलिखित उत्तरों में से किये
आने वाली उत्तर को चुनिये।

1- रौप्यार्पणपरिणामरूप किये आने वाले उत्तर के फल का कारण क्या है?

- A □ आनना - देयना
- B □ अशुभकर्म का उदय
- C □ लक्ष्मी
- D □ मोह - राग - द्वेष
- E □ शरीर में लक्ष्मी की किये

② 'नेच' या 'नैच' कर्म है।

1- दुष्टकर्म का उदय होने पर लक्ष्मी को राग-द्वेष करना ही पड़ता है।

2- यह अशुभकर्म ठीक लक्ष्मी का कर्मण में आने का अर्थ है।

3- आनन के पदार्थों को आनना - देयना मगर उनमें लक्ष्मी - दुष्टकर्म की कर्मण न करना अर्थ की किये है।

4- शरीर रोगी हो तो लक्ष्मी नहीं, निरोगी हो तो लक्ष्मी - दुष्टकर्म को निश्चय से आने का कारण की किये है, रौप्यार्पणपरिणाम है।

5- इस गाथा में रौप्यार्पणपरिणाम किये आने वाले उत्तर के फल का कारण का विवेचन है।

৩১৬৭

[illegible]

① जोड़ी मिलाइये ।

1 - स्थान	A. अठना
2 - आसन	B. ठोड़ रहना
3 - अवस्थान	C. स्थिर रहना
4 - कृष्ण द्विपूर्वक	D. रहना ही
5 - क्रिया विशेष	E. क्रिया के प्रकार
6 - इच्छावशुत	F. इच्छा बिना

② 'तय' या 'यु' बनाइये ।

- 1- शरीर की क्रिया परिणाम है, आत्मा परिणाम है।
- 2- केवल आत्मा कृष्ण द्विपूर्वक ठोड़-अठने बिहार करती है।
- 3- विषयविनि आत्मा की इच्छा बिना स्थिर है।
- 4- देह की क्रिया संचाली भाव है, जीव का राग संचाल है।
- 5- अविहृत केवल आत्मा विषयविनि के साथ निश्चय है कोई संचाल नहीं है, इच्छाविनि विषयविनि की प्रामाणिकता पर प्रकाश-विहृत भवता है।
- 6- इस गाथा में अठना हुआ शरीरों के मायाचरण की आत्मा तथा महिमाओं के लिये आत्मा है।

ગાંધી યુ

વિધાનભવન: એ પ્રમાણે દેશના નીચાંતરે પુરુષો વિના અર્થવિસ્તર જ છે (-HIV
તરત નથી, સ્વભાવનો વિધાન ધાર તરત નથી) અને એનાથી ફેરવે-
ગાંધી: એ પ્રયત્ન કરો, જે કરી શકાય છે એવો;

મોરારીદાસ ભટ્ટાચાર્ય ને તે વિધાન કાર્યકારી ગણે. આ
અનુચિત: અર્થેનનામકે પુરુષ સ્વભાવ છે અને તેનાથી વિધાન કરી શકાય છે;
અભિવ્યક્તિ રીતે છે તેને તે કાર્યકારી ગણવામાં આવે છે.

ભાષણ: અર્થેનનામકે જે ભૂલ થઈ, વિદ્યાર્થીઓ વિધાન કરે છે તે વિધાન પ્રજા
અભિવ્યક્તિ પ્રજાપરિચયને વિનિયમન પ્રજાપરિચય તરત વિધાન વિધાન થયે
છે તેને કરી શકાય છે. તે વિધાન અર્થેનનામકે અર્થેનનામકે ભાષણ
વિધાન તરત નથી, તરત તે વિધાન પ્રજા અભિવ્યક્તિ રીતે વિધાન
વિનિયમન અર્થેનનામકે (તેને) કુલ થાય છે. બધી તે વિધાન તેને રીતે
વિધાનના અભિવ્યક્તિ ભાષણ ભાષણ તરત, પરંતુ પ્રજાપરિચય
વિધાન છે તેને જે તરત વિધાન તે વિધાન થાય છે તે તરત વિધાન રીતે
પરિચય થાય છે. આ રીતે અર્થેનનામકે કુલ વિધાન થાય છે અને તરત
કુલ તરત વિધાન અર્થેનનામકે તે કરી શકાય છે વિધાન કાર્યકારી રીતે
આવે છે.

ગાંધી: - વિધાન = વિધાન - વિનિયમ તરત (વિધાન ભાષણ) = વિધાન - રીતે - વિધાન

• આ રીતે વિધાન વિનિયમના અભિવ્યક્તિના તરત ભાષણના અભિવ્યક્તિ
ભાષણ થાય નથી, તે પછી ભાષણના પ્રજાપરિચય રીતે વિધાન અર્થેનનામકે
ભાષણ થાય છે.

• પ્રજાપરિચય પ્રજાપરિચય રીતે થાય છે અને વિધાન રીતે અભિવ્યક્તિના અર્થે
અર્થેનનામકે, અર્થેનનામકે, પ્રજાપરિચય તરત થાય છે. અર્થેનનામકે
વિધાનના અભિવ્યક્તિ થાય થાય છે, તેને તેને વિધાન રીતે અભિવ્યક્તિના
જે ભાષણ થાય નથી. આ ભાષણના પ્રજાપરિચય પ્રજાપરિચય તરત
તરત; તરત તે આ રીતે વિધાન જે ભાષણ તેને તેને અર્થેનનામકે
જે ભાષણ અર્થેનનામકે થાય તે ભાષણ રીતે પ્રજાપરિચય પ્રજાપરિચય
થાય નથી.

• આ રીતે ગાંધી અર્થેનનામકે છે, અર્થેનનામકે રીતે છે.

• વિધાનનામકે જે રીતે અર્થેનનામકે થાય છે, તે રીતે અર્થેનનામકે
થાય છે. 'હું ગાંધીનામકે' - અર્થેનનામકે તરત વિધાન રીતે તરત
વિધાનના અર્થેનનામકે તે રીતે અર્થેનનામકે થાય છે અને તેને કરી શકાય છે
કાર્યકારી રીતે છે.

• વિધાનનામકે રીતે-રીતે પ્રજાપરિચય થાય છે, તેને કરી શકાય છે
કાર્યકારી રીતે છે. તે કરી શકાય છે વિધાનનામકે તરત થાય છે, પરંતુ
પરંતુ તરત તરત થાય છે, તેને કરી શકાય છે વિધાન તે રીતે કાર્યકારી
ગણે.

• વિધાનનામકે વિધાનનામકે રીતે રીતે થાય છે. આ રીતે વિધાનનામકે
ભાષણ થાય નથી તેને તેને પ્રજાપરિચય થાય છે. આ તરત વિધાનનામકે

તેણે એ જ પુરુષને ભૂત કરેલો માણસ તો જોઈ જ છે, અર્થાત્તઃ
 અર્થાત્તઃ = જોઈ = ને તે તરફ તો જવાનું થઈને તરફે લઈ નહ. [એ
 'પુરુષ'ના કરેલોને અર્થ પુરુષના ક્રમને કરેલો થાય છે - એમ નહ. એને
 અર્થ ને એમ છે કે કરેલો માણસને પુરુષના ઉદયમાં જે ફિલ્મને થાય છે, ને
 પુરુષના ક્રમ છે અર્થાત્તઃ કોઈકની છે, ને કરેલો માણસને તો જવાનું થઈને
 નહ. એ ^{અર્થ} ફિલ્મને ફોલો ફો ને જાણ ? જરૂર જાણ - તરફ ને ને જાણ
 જાણને લઈ લઈ નહ.

હવે આ જાણ ગાથા તરફ ગાથા છે. એકાદ જાણ તો જોઈ તરફ તરફે જાણ
 ને જાણ જાણ તરફ છે. એ જાણ - જોઈ જાણ તો જાણ તરફ છે જે પુરુષના
 ક્રમને તરફે જાણ થાય છે.

એ જાણ તરફ છે જે તરફે જાણ જે અર્થ થાય છે ને પુરુષના ક્રમને થાય છે. પહેલું
 જે જાણ થાય છે ને જાણ પુરુષના ક્રમને થાય છે અને જાણ થાય છે અર્થ થાય છે
 જે થાય છે ને તરફે જાણ થાય છે.

પુરુષને ભૂત કરેલો પુરુષના ક્રમને અર્થાત્તઃ છે કરેલો તરફ
 તરફે નહ.

તરફે જાણ જે જાણે જાણે કરેલો જાણ થાય છે જાણ થાય છે અને
 જાણે ને જાણ થાય છે અને જાણ થાય છે અને જાણ થાય છે અને જાણ થાય છે

અર્થાત્તઃ પુરુષને જાણ થાય છે અને જાણ થાય છે. પણ જાણ - જાણ - જાણ
 જાણે જાણે કરેલો પુરુષને જાણ થાય છે અને જાણ થાય છે, પહેલું
 જાણે જાણે છે જે જાણે પુરુષ થાય છે અને જાણે તરફે જાણ થાય છે!

જે જાણે જાણે તરફે જાણે ક્રમ થાય છે. એ ને જાણે જાણે પુરુષના ક્રમ
 થાય છે અને જાણ થાય છે, પુરુષના ક્રમને અર્થાત્તઃ જાણે જાણ થાય છે?

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે, એ જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે?

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે નહ. ને જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

પુરુષના ક્રમને જાણે જાણ થાય છે.

અર્થાત્તઃ થાય છે એ ને જાણ થાય છે જાણે જાણ થાય છે, ને જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

અર્થાત્તઃ જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે, પહેલું પુરુષના ક્રમને અર્થાત્તઃ જાણે જાણ થાય છે.

તરફે જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે અને જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે ને જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે. જાણે જાણે જાણે જાણે જાણ થાય છે.

(१) जोड़ो मिलाइए।

1. प्रकृति और प्रदेशबंध
2. स्थान और अनुभागबंध

- A. मिथ्यात्व, अतिरिक्त, प्रमाद, कसाय
- B. योग

3. अकिंचित्कर

C. मोह-राग-द्वेष

4. उपरंजक

D. प्रहास्त राग

5. तीर्थंकर प्रकृति का कारण

E. जिसके कारण कोई फल न मिले।

(२) 'सत्य' या 'जुष्ट' बताइए।

- 1- सिमंछर भगवानकी आयु उनके क्रोड पूर्व वर्णकी है; इसलिये उन्हें धर्मोपदेश, विहार आदि किया है इतने काल तक का गया कर्मबंध हो सकता है।
- 2- केवलजी भगवानको गया आश्रय उनके समयका ही होता है।
- 3- पुण्यफल अरहंत = पुण्य के फल स्वरूप अरहंत पद मिलता है; अतः पुण्य करना धर्म है।
- 4- पुण्यफल अरहंत = अरहंत भगवानों पुण्य के फलवाले हैं; पुण्य के फलस्वरूप उनके इतिहास होते हैं।
- 5- तीर्थंकर प्रकृति के इदय से समलक्षण, दिव्यद्विती आदि होते हैं।
- 6- जो भाव है (प्रहास्त राग) तीर्थंकर प्रकृति बंधती है, इस भावका (रागका) जाश वस्त्र गुणस्थान में होने पर वस्त्र के गुणस्थान में केवलराग प्रगटता है और तीर्थंकर प्रकृति इदय में आती है।
- 7- प्रहास्त राग उपादेय है, अप्रहास्त राग हथ है।
- 8- तीर्थंकर प्रकृति की उदीरणा हो सकती है।
- 9- मैं सोलता हूँ, चलता हूँ, सोल सकता हूँ, चल सकता हूँ-आदि मान्यता बंध का कारण है।
- 10- स्थान, आसन, विहार, धर्मोपदेश आदि केवलजी भगवानकी किया कर्मों के साधन होती है; इसलिये उसे आधिकी है।
- 11- अरहंत के जो किया होती है वे सब पुण्यदेय के फलस्वरूप होती है; इसलिये उसे आधिकी है।
- 12- अरहंत के कर्मों के प्रतिक्षण जाश होता जाता है, इस उपदेय के उनकी आधिकी किया को आधिकी कह देते हैं आया है।
- 13- हमारी आधिकी किया भी आधिकी है क्योंकि इदय में आये हुये हमारे कर्मों शिवर आते हैं।

① जोड़ी मिलाइये।

1. शुद्धीनय

A. ज्ञात्मा शुद्धाशुभभाव रूप परिणामित होता है।

2. कृष्णनय

B. ज्ञात्मा शुद्धाशुभभाव रूप परिणामित नहीं होता।

② 'रन्ध्र' या 'जूठ' बताइये।

1- परिणाम धर्म = पलटनेका स्थिति = बदलनेका धर्म

2- ज्ञात्मा निरन्ध्रस्थिति है; इसलिये इसमें परिणाम धर्म नहीं हो सकता।

3- यह गाथाका तात्पर्य ज्ञानने परिणाम पर दृष्टि करानेका है।

4- यह बिकार मेरा है - ज्ञात्मा जो जाने वह इसको छोड़ लेके।

- ફોલોપરિન+ટાન ભાલિજેય છે, કમ્પુ પ્રેરણ છે; ફોલિ+ટાન કમ્પો-લેડા-પ્રેરણ ભાલે છે
- દરેક આત્મા, દરેક પરમાત્મા ભિન્ન ભિન્ન રહેલો તે દેખાતો રીતે છે.
- કહે જેની પદ્ધતિના આરભ ભાતત તેના ફળનું શું થયું? કોને કોનની પદ્ધતિને જાગર છે ખમ્મ!
- આત્મા ગ્રીભી ગાન કદી ગદી ભિત્તે નાં પડેલાં ત્યાં?
- કલ્પાનનનીય = કોઈ કોઈનું ફળ કોને બાળ માંથી કલ્પાનનનનીય ફળો.
- ભિન્ન ભિન્ન રહેલોને ભવને વિચિત્રતા પ્રગટ થઈ છે કોને કલ્પાનનનનીય ભવને પદ્ધતિના પ્રગટ થઈ છે.
- ફળપ્રપ્તિ = ફળે ફળે જમાવ્યું ન્યું - નીચલાં ટાનમાં-ફોલોપરિન+ટાનમાં ફળે જમાવ્યું
- ભાવનાને ફોલોપરિન+ટાનને આરભ થઈ ગયા છે.
- આપ્તના પ્રભુ જોડાણને બધું મારો કાલેલો. બધું વિચારત દેખા. ટાનનું ભાન થયું થયે ગયું. આનંદ થયો કાલેલો. પદ્ધતિ મંડ પડેલો થઈ છે કોને નહીં, પદ્ધતિ નિરૂપિત થઈ ગયું છે તેને તેને આપ્તના લેઈ કોને તથ્ય છે.
- કમ્પુ મર્યાદિત પ્રેરણાન ભાવના દેખા, તે લઈ લઈ પ્રેરણા ભાવના તે મર્યાદિત વિશુદ્ધિ તેને દૂલ ગાય. તે (ફોલોપરિન+ટાન) ટાન નાં પામ્યું.
- કોઈ પ્રતિયોગ = હું દેખા ભિન્ન ભિન્ન થોને? કોઈ આત્મા મર્યાદિત છે કોને કોઈ આત્મા-ભિન્નતા ભવને - કલ્પિત કોને નહીં. ભાવનું ટાન છે, તે પદ્ધતિ છે.
- જીવન: વિશુદ્ધિ લેઈ લઈ ફોલોપરિન ટાન તો, કાંઈ, ગત કાંઈ પાડેલાં ફેરવા પ્રેરણા જ વિશુદ્ધિ-ભિન્નતા-ભાલે છે, પદ્ધતિ તેની જીવ પ્રેરણા ભાલે છે; મારે તેને કમ્પુ પ્રેરણા વિશુદ્ધિ દૂલ ભાલે છે - ગદી પાડા ભાલે છે.
- આ પાડેલ ઇન્દ્રિય પાડેલા પ્રેરણા - પ્રતિ ભિન્ન પ્રેરણા જ - કલ્પાન કલ્પાન ભિન્નતા છે, લેઈ પ્રેરણા ભિન્નતા ફોલોપરિન ટાનને લઈ. કદી 'વિશુદ્ધિ' જીવ પ્રેરણા ભિન્નતા મારે વાપરી છે.
- જીવ આપરણા ફોલો લેઈ: લેઈ લેઈ જીવ આપરણા ફોલોપરિન છે; તેને તે જીવને પ્રતિયોગ ટાન નહીં; પદ્ધતિ ફોલોપરિન ટાન જીવ વિચિત્રતાને લેઈ લેઈ જીવને પ્રતિયોગ છે.
- કોઈ ભિન્નતા જીવ ભાલે: કોઈ જીવની ટાન પદ્ધતિને ફેરવે ભિન્નતા થી?
- કોને કોને પદ્ધતિના ભિન્ન શું થઈ?
- જીવ = જીવ પ્રતિયોગ (ભાલ); જીવ = જીવ દેખા (દેખા); જીવ = જીવ તો (તો); જીવ = જીવ જીવ (જીવ); આપરણા = ભાવના જીવ જીવ;
- જીવ જીવ, જીવ જીવ, જીવ જીવ - ભિન્નતા જીવ, જીવ પ્રતિયોગ, આ જીવ જીવ.
- જીવને લેઈ કોઈ કોઈનામાં માં મારીના વિશિષ્ટ લાભે આપે થઈ કોઈ પદ્ધતિના આલ ભાલે છે? બાધુ! ટાનની પદ્ધતિના આલ ભાલે શું થઈ? કોઈ આલ જીવ - કોને કોને કોને જીવને કોને ભાલે કોઈ જીવ આલ છે.
- ભાવના આલ ભાલે વિચિત્રતા થઈ! શું શું ભાલે આલ ભાલે! શું પદ્ધતિના આલ ભાલે!

- કોસા પ્રધિ ને કોસદિમાન છે, તેને વિદિમાન તરીકે જાણે છે, પરંતુ
તેને વિદિમાન છે, કોસ ને વિદિમાન તરીકે જાણે!
- તારુ છે, ભવન છે, તારુ છે, ભવન છે. કોસ ભવનમાં કોયું નવ
વિદિમાન છે.
- જેની અંતરમાં કોસ નહીં, જેના ગુણમાં કોસ છે તેને કોસ વિદિમાન
છે.
- કોસ-તારુને પ્રધિ શું? કોસ કોસદિમાન પ્રધિ છે, કોસને તેની પ્રધિ
જેમ ન તરીકે?

ਭਾਈ ਨਿਰਮਲਾਇਤ ।

(2) 'लघु' या 'पूठ' बनाईके।

- 1- हम सबको सिर्फ द्वायोपशमिक शान ही है " लेकिन केपलरी
आजान को द्वायिक और द्वायोपशमिक दोनों शान है।
- 2- यह इतीन्द्रिय शान और शरणा के इतिनंदन की गाथा है।
- 3- द्वायोपशमिक और द्वायिक शान में और मात्र इतना ही है
कि द्वायोपशमिक शान कम जानता है और द्वायिक शान इससे
अहुत ज्यादा जानता है।
- 4- केपलर शान की एक पद्यायिका चमत्कारिकपना आज भी आजान यह
सत्यदर्शन की प्राप्ति जानता है।
- 5- केपलर शान के निषिद्धों मोहलतय का और शरयो देव का निषिद्ध समा
जाना है, इसलिये हम शानरचय प्रशासन को देवाधिकार को कह सकते हैं।

[a] જે સમસ્યા દાખલ કરી દેવામાં નથી	[a] જે સમસ્યા સંપૂર્ણ રીતે સમાધાનમાં નથી
[b] સમસ્યા દાખલ કરી દેવામાં નથી	[b] સમસ્યા સંપૂર્ણ રીતે સમાધાનમાં નથી
[c] સમસ્યા દાખલ કરી દેવામાં નથી	[c] સમસ્યા સંપૂર્ણ રીતે સમાધાનમાં નથી
[d] સમસ્યા દાખલ કરી દેવામાં નથી	[d] સમસ્યા સંપૂર્ણ રીતે સમાધાનમાં નથી
[e] સમસ્યા દાખલ કરી દેવામાં નથી	[e] સમસ્યા સંપૂર્ણ રીતે સમાધાનમાં નથી
[f] સમસ્યા દાખલ કરી દેવામાં નથી	[f] સમસ્યા સંપૂર્ણ રીતે સમાધાનમાં નથી

[စာအုပ် : အသက် အသက်] ပတ် သိက္ခပေါ် ကိုယ် နာကျင်မှု ဖြစ်ပါသည်။
 ရှေးက ပတ် ပတ်ကို ပြန်လည် သိပ္ပံနည်း စမ်း.

(4) ආකූල:] මෙම නිව් මගින් දැනට ඇති අය වී සිටින අයගේ සංඛ්‍යාව, එම නිසාම (-කිසිවක්) අඩුවේ.

જાણીતી :- કાચાચ જ્યારેન: બધા પદાર્થો રહે છે અને તેમાંથી વિવિધ વસ્તુઓ બનાવી શકાય છે.

- [illegible]

① जौड़ी निम्नाइये ।

1. वृत्ति

2. आकार

3. निरवधि

4. स्वरः

A. शब्दों के अक्षरों के बिना

B. अनादि-अनंत

C. स्वरूप

D. इच्छित

② 'स्वयं या जगत्' काइये ।

1- जो स्वयं को जानता नहीं, वह स्वयं को जानता नहीं ।

2- केवलज्ञान की तरह ज्ञान का स्वरूप भी स्वयं शब्दों को जानने का है ।

3- ज्ञान का स्वरूप स्वयं शब्दों को जाने शक्ति जानने का है ।

4- स्वयं को ज्ञात ।

5- मूल गाथा में जो पद्यों की बात की है, वह केवलज्ञान की पद्य है ।

6- मेरी कमबख्त पद्यों का भी मैं जाना हूँ, कत नहीं ।

7- ज्ञान पर को जानता है- ज्ञान कहना व्यर्थ है ।

8- ईश्वर के अनिष्टज्ञान दिग्गज है, स्वरूप नहीं ।

9- ज्ञान शब्दों शब्दों के अक्षरों के बिना स्वरूप जानता है ।

10- इस गाथा में हमें पूजा की प्रतीति हो सकती है ।

(१)

आदी लिखाइये ।

1. गाथा ४८	A. जो दोन कालद्वयको नहीं जानता वह सर्वको नहीं
2. गाथा ४९	B. जो सर्वको नहीं जानता वह दोन कालद्वयको ^{जानता} [नहीं जानता]
3. व्याख्यान	C. जानता
4. स्वसंचेतक	D. अद्वैतज्ञ
5. लघुकाव्य	E. अथर्व प्रकार के अर्थों का अनुभव करना
6. व्यापन	F. मणिमुक्त में अनुभव
7. द्वागुभयप्रत्यक्ष C स्वसंचेतक	G. अथर्व पर के अथर्व का अनुमान राग

(२)

'सच' या 'जुह' लिखाइये ।

- 1- अर्थ का द्वैत सर्व का राग दोन राग ही होता है ।
- 2- अर्थ का राग द्वैत दोन राग-इन दोन को भिन्न करना कालानुसार है ।
- 3- केवल भाषा भाषा को व्यवहार के जानते हैं, इसलिये वे लोकालोक को जानते ही नहीं; क्योंकि व्यवहार अशुद्ध है ।
- 4- केवल भाषा भाषा को प्रत्यक्ष जानते हैं, इसलिये वे लक्ष्य होकर जानते हैं ।
- 5- विज्ञान का दोन अर्थ राग होता है, इसलिये विज्ञान केवल भाषा लघुकाव्य नहीं हो सकता ।
- 6- राग का स्वभाव विज्ञानात्मक (अद्वैतपूर्ण जानने का) है ।
- 7- स्वभाव का भी अर्थ द्वैत पराधीन नहीं होता ।
- 8- जिसने केवल केवल भाषा पढ़ी जानी, इन सर्व द्वय-पदार्थों का जानने में है अर्थ ।
- 9- यहाँ अद्वैतभाव की बात है ।
- 10- अर्थ का लक्ष्य लक्ष्य शक्तिशाली है, किन्तु इसकी दोन राग की पद्धति में दोन शक्ति नहीं है ।
- 11- अर्थ के दोन भाग के राग के होना पूरे अर्थ के राग को लक्ष्य कहते हैं ।
- 12- शब्दों के द्वैत भाषा के अर्थ अर्थ नहीं ।
- 13- जिसने दोन पदार्थों के लक्ष्य प्रत्यक्ष नहीं जाना, वह सर्वद्वयों का भी जान सकता नहीं ।
- 14- इन दोन के महाभाषा के लक्ष्य इसी अर्थ की बात को पढ़ा करने का प्रयोग हमें प्राप्त होता है ।

2021:

התאחדות המורים והמורות

જાણકાર: જરૂર અને જાન્યારી માટેના ફાઇનલિંગ્સ અને સરકારના નિયમોનું પાલન કરવાનું છે, અને તે પાલન કરવાનું છે તે સરકારના નિયમોનું પાલન કરવાનું છે. પાલન કરવાનું છે અને સરકારના નિયમોનું પાલન કરવાનું છે. પાલન કરવાનું છે અને સરકારના નિયમોનું પાલન કરવાનું છે. પાલન કરવાનું છે અને સરકારના નિયમોનું પાલન કરવાનું છે.

1) ટીપ્પણી : • સ્થાનિક ગુણ-ધર્મોના દારૂના પત્તરના આધારે સ્થાનિક
જાણીતા નથી જાણતા; ને સ્થાનિકના ધર્મોના પુત્ર દ્વારા જાણીતા જાણીતા
દર્જા ને પાછાં પાછાં જાણીતા? આપ જાણીતા આ જાણીતા જાણીતા
જાણીતા?

१) प्रवचन के - उत्तर देने के : निम्नलिखित उत्तरों में से किये के सही उत्तर को चुनिये।

इस गाथा में द्वायोपशमिक शान की बिन्दु कमजोरियाँ बताई गयी हैं?

A □ वह अल्प है, परोक्ष है।

B □ वह अल्प रूप रहता नहीं, उन्मूलन अस्पष्ट है।

C □ वह नित्य नहीं है, शाश्वत नहीं है, सर्वज्ञ नहीं है।

D □ इसके मुख्य उपपत्ति नहीं है, इसलिये है।

२) 'नेच' या 'पूठ' बताइये।

1- इस गाथा में द्वायोपशमिक शान का हेतु क्या बताया है।

2- जिसे शक्ति प्राप्त होता है, उसे सर्वज्ञता प्राप्त होती है।

3- द्वायोपशमिक शान दोषों के अन्तर्गत (निमित्त) उत्पन्न होता है।

4- भैरव परम को हम अनुमान से जानते हैं, इसलिये इसे प्रत्यक्ष जानने वाला भी जरूर होना चाहिये।

5- तीन कालों में तीन कालों को जानने वाले का कर्म बिरह नहीं होता।

6 - कम से प्रवचन शान सर्वज्ञ नहीं हो सकता।

7 - We should be proud of our knowledge of Pravachansam.

2121

តើមាន អ្នក យុវជន, ក្រុម ឯកជន ឯ ពាណិជ្ជ ២១

(આધાર) :- અંતર પાલક દ્વારા એક સંપૂર્ણ બાળક એક જ પ્રકારે પાલકાઈ જારી હોવાનો જોર છે, બાળકની રીતભલ શિક્ષાનો ખુબી ગાંધ હોવાનો કીયતિ છે; આથી અંતરિય જાનવાળાં પુલક જ સંવત્ન હોય શાકે. સંવત્નના એક જાનવું H૪૫ પરમ અંતરના જાણવાળા છે.

• ટાઈગર = ટાઈગર પહોંચાણ બંધુ' છે. (પંચાલ્યાયમાં ટાઈગર એકાદ જિલ્લામાં રહેતો હતો)

१) प्रश्न क्रम - उत्तर क्रम : निम्नलिखित उत्तरों में से किसी एक सही उत्तर को चुनीये।

1- इस गाथा में द्वायिक शास्त्र की सर्वोत्कृष्टता के लिये कौन के कारण दिये गये हैं?

A □ वह अतान्द्रिय और व्युत्पन्न है।

B □ वह नित्य, द्वायिक और सदैव है।

C □ वह लेश्वर गुणस्थान में प्रकाश होता है।

D □ वह साक्षि, अनन्त रहता है।

२) सैच' या 'सूच' अनादि'।

1- शुभापद प्रवर्तमान शास्त्र ही सदैवगत हो सकता है।

2- द्वायिक शास्त्र में साक्षि क्रिया होती है, परंतु साक्षिपरिपलिंग नहीं होता।

3- संकोत्कीर्ण = पक्षद्वय में एक के कंडारी हुई आकृति।

4- केवलशास्त्र में सर्व द्रव्य-पदार्थों के अनादि अनन्त सौधाकार संकोत्कीर्ण है।

5- अनित्य पदार्थों को यहाँ नित्य कहा गया है।

6- सदैवगत = सदैव तक पहुँच जाने वाला।

7- द्वायिकशास्त्र = केवलशास्त्र।